राजभवन देहरादून में आयोजित 'राष्ट्रीय सम्मेलन' में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(08 अक्टूबर, 2022)

'अहिंसा विश्व भारती' के संस्थापक पूज्य आचार्य डॉ. लोकेश जी, योगऋषि स्वामी रामदेव जी, आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानन्द जी, स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, श्री सौरव बोरा, श्री अनिल मोंगा, कर्नल तेजेन्द्र पाल त्यागी जी एवं उपस्थित बंधुओं एवं बहिनों !

आज बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि विश्व शान्तिदूत आचार्य **डॉ. लोकेशजी के दीक्षा के 40वें वर्ष** के शुभारंभ पर आयोजित **'प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण में संतों का योगदान'** विषय पर आधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

भारत ऋषि–मुनियों की भूमि है। यहाँ पर जगद्गुरू शंकराचार्य, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, गुरुनानक देव, सूर, तुलसी, कबीर, रैदास जी जैसे महान संतों ने दुनिया को अहिंसा, शांति, सद्भावना और आपसी भाईचारा का संदेश दिया है।

संत,सैनिक और सेवक के वेश में दशमेश गुरुगोविन्द सिंह जी महाराज ने संतों की एक महान परंपरा को आगे बढ़ाया है।

एक सच्चा सिख एक संत के गुणों को लिए हुए समाज की भालाई और सेवा में सदैव समर्पित रहता है।

आज जो आयोजन यहां हो रहा है, इसके आदर्श और कारण आचार्य लोकेश जी हैं।

आचार्य लोकेश जी हमारी संत परम्परा के बड़े लक्ष्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

भारत में प्रकृति और संस्कृति का समन्वय है और यह समन्वय भारत की महान संत परम्परा के कारण ही है।

भारत की संस्कृति स्वयं में ही प्रकृति की संस्कृति है। यहां ईश्वर के अवतारों में भी प्रकृति का साथ होता है।

भारत के सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष को संसार का कारण बताया गया है। यहां पुरुष का मतलब परमात्मा से है और प्रकृति का अर्थ है माया।

यह जो चराचर जगत् है यह सब माया है अर्थात् प्रकृति ही है। इस लिए भारत ने अपनी सभ्यता और संस्कृति के विकास में कभी भी प्रकृति की अवहेलना नहीं की है।

भारत की सभ्यता वनों की सभ्यता है। ज्ञान और बोध का विकास वनों में ही हुआ है। प्रकृति के नदी, संगमों, सरोवरों, पर्वतों और शिखरों पर ईश्वरीय सत्ता की स्थापना की गयी है।

हमारे शिक्षा केन्द्र वनों में हुआ करते थे। हमारी विद्या के केन्द्र गुरुकुल, आश्रम,मठ और मन्दिर सभी प्रकृति की गोद में ही विकसित हुए हैं।

वेद, उपनिषद् आरण्यकों की रचना नदी संगमों और गुफाओं में हुई है। रामायण और महाभारत की रचना भी पर्वत शिखरों में हुई है।

इन धार्मिक सांस्कृतिक ग्रन्थों में प्रकृति की महिमा का अलौकिक वर्णन मिलता है।

ऋषियों की यह धरती प्रकृति की उपासना की धरती है।

पृथ्वी, अन्तरिक्ष, वायु अग्नि जैसे प्रकृति की शक्तियों की उपासना ईश्वरीय शक्ति के रूप में की गयी है। वनस्पति को ईश्वरीय शक्ति कहा गया है।

ऐसी प्रकृति की संस्कृति को विकसित करने में देश के संत महात्माओं का ही योगदान है।

संत देश के असली नायक हैं। संतों ने अपने ज्ञान के बल पर त्याग और तपस्या के बल पर समाज को एक दिशा प्रदान की है, एक नेतृत्व प्रदान किया है।

भारत की स्वतंत्रता आन्दोलनों में भी संतो ने समाज का मार्गदर्शन किया है भारत की सनातन संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए कार्य किया है।

भारतीय जनमानस के हृदय पर संतों की पवित्र वाणी का अत्यन्त गहरा प्रभाव पड़ता है।

भारत का जनमानस संतों के त्याग और तप की वंदना करता है। उस तपःपूत संत वाणी का हमारे समाज पर एक गहरा प्रभाव होता है।

आचार्य लोकेश जी और आज राजभवन में विराजमान संत समाज हमारी उस महान संत परम्परा को आगे ले जाते हुए अपने त्याग और तपस्या के बल पर समाज को एक दिशा दे रहा है।

इसी परम्परा में आचार्य लोकेश जी के नेतृत्व में **'अहिंसा विश्व भारती'** एवं विश्व शांति केंद्र पिछले 39 वर्षों से राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों के उत्थान, विश्व में अहिंसा, शांति, सद्भावना की स्थापना एवं प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास कर रहा हैं।

अहिंसा विश्व भारती के माध्यम से वे प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण के साथ – साथ पर्यावरण, प्रदूषण, कन्या भ्रूणहत्या, नशाखोरी जैसी सामाजिक समस्याओं के प्रति जनचेतना जगाने का भागीरथ प्रयत्न कर रहे है।

आचार्यश्री के 40वें दीक्षा दिवस के शुभारंभ पर यह 'प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण में संतों का योगदान'

विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी कई मायनों में बहुत महत्वपूर्ण है।

सच कहूँ तो प्रकृति और संस्कृति दोनो का ही निर्माण, पोषण और संवर्धन संतो के द्वारा ही होता है।

संत की संस्कृति के मूल आधार हैं। उनके विचार ही संस्कृति के पोषक हैं।

चाहे भगवान महावीर हों या संत सूर, तुलसी, कबीर, रैदास, दादू या आज के इस मंच पर विराजमान संत मूर्तियां आप लोग की संस्कृति के उत्पादक, पालक और पोषक हो।

प्रकृति की रक्षा का मार्ग भी संतों के द्वारा ही बताया गया है। भगवान महावीर ने शांति और अहिंसा का महान दर्शन दिया है।

अहिंसा और सत्य में महान शक्ति है। अहिंसा ही हिंसा पर विजय प्राप्त कर सकती है।

अहिंसा के लिए हिंसक से अधिक शक्ति की आवश्यकता होती है। इस लिए हमें शक्ति की उपासना के बल पर शांति का मार्ग दिखाना होगा।

वर्तमान में विश्व में तीन बड़ी समस्याएं हैं – ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन, हिंसा और आतंकवाद, अभाव और असमानता।

ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के लिए जनता का जागरूक होना बहुत जरूरी है। संयम आधारित जीवन शैली इसमें बड़ा योगदान दे सकती हैं।

इसी तरह हिंसा और आतंकवाद की रोकथाम के लिए भी जन चेतना को जगाना बहुत जरूरी है।

हिंसा और आतंक किसी समस्या का समाधान नहीं है, हिंसा प्रतिहिंसा को जन्म देती है, वार्ता एवं संवाद के द्वारा हर समस्या को सुलझाया जा सकता है।

प्रत्येक नागरिक अपने विचारों और भावनाओं की तरह दूसरों के विचारों का भी आदर करें। वैचारिक प्रदूषण पर्यावरण प्रदूषण से भी अधिक खतरनाक है, धार्मिक असहिष्णुता अपने मत के दुराग्रह के द्वारा ही तालिबान जैसे सांप्रदायिक कट्टरता जन्म लेती है।

मैं इस अवसर पर पूज्य आचार्य डॉ. लोकेशजी एवं उनकी पूरी टीम को को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

'संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ होय' संतो का यह सम्मेलन विरल ही है। एक संत ही कल्याणकारी हैं यहां आज देवभूमि के अनेक महापुरुष एक साथ राजभवन में सम्मिलित हुए हैं यह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है।

आचार्यश्री के इस 40वें दीक्षावर्ष के प्रवेशोत्सव में मैं आचार्यश्री के यशस्वी जीवन और दीर्घ आयुष्य की कामना करता हूँ।

आप परोपकार की इसी दृष्टि से समाज का कल्याण करें। लोगों को सत्य अहिंसा और स्वच्छ पर्यावरण का आपका महान संकल्प सार्थक हो यही कामना करता हूँ।

राजभवन में पधारे सभी संत महापुरुषों को नमन करता हूँ।

बहुत बहुत शुभकामनाएं!

जय हिन्द।